Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 3, Issue - 1, Jan-Feb – 2020
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 3.589
Received on : 13/02/2020 Accepted on : 25/02/2020 Publication Date: 28/02/2020

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियो के स्वप्रत्यय का अध्ययन

विजय लक्ष्मी शर्मा
प्रवक्ता (शिक्षा विभाग), ज्योति कॉलेज ऑफ मैनेजमेंट,
साइन्स एंड टेक्नोलॉजी, बरेली

सारांश: प्रस्तुत शोध मे माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियो के स्वप्रत्यय का अध्ययन से सम्बन्धित है। इस शोध पत्र अध्ययन मे विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय जानने के लिये Prof. S.P. Ahluwallia के द्वारा निर्मित CSCS मापना का प्रयोग किया गया इसमे माध्यमिक स्तर के ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के छात्र–छात्राओं के स्वप्रत्यय में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया शहरी व ग्रामो छात्र–छात्राओं की पृष्ठ भूमि में स्वप्रत्यय उच्च व समान है।

१ प्रस्तावना:

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथ समाज मे उसकी उपलब्धि महत्वपूर्ण होता है। वही समाज का निर्माता और संरक्षक होता है। यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा धातक का सर्वागीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्धान तथा वीर बनाती है। तथा स्वप्रत्यय के निर्माण मे शिक्षा ही महत्वपूर्ण भूमिका है आत्मप्रत्यय एंव विद्यालय का धनिष्ट संबंध होकर है। बालक में आल्य प्रत्यय का विकास विद्यालय वातावरण में अधिक होता है। शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी के आत्म प्रत्यय को विकसित करने मे सहायक होती है।

प्रस्तुत अध्ययन को आवश्यकता इसलिये अनुभव को गयी क्योंकि माध्यमिक स्तर पर पडने वाले विद्यार्थी किशोरावस्था के मध्यकाल में होते ही इस अवस्था की उनकी व्यक्तिस्थिति (Individual Status) आस्पष्ट (Unclear) होती और उसे स्वयं ही अपने द्वारा की जाने वाली सामाजिक भूमिका के बारे में सदेह होता है। इस कारण उनका स्वयं के प्रति दृष्टिकोण या आत्म सप्रत्यय में प्रवेश हो जाता है। जिससे विद्यार्थियों के व्यक्तिगत विकास मे बाधा उत्पन्न होने लगती है। विद्यार्थी की इस मनोदशा पर उनके लिंग, उनको पढाये जाने वाले विषयों तथा सम्बन्धित सहपाढियों शिक्षको के व्यवहार का भी प्रभाव पड़ता है।

अतः शोधकर्ता को माध्यामिक स्तर के विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय का अध्ययन करने की आवश्यकता का अनुभव हुआ।

२ अध्ययन के उद्देश्य:

- माध्यमिक स्तर के क्षेत्र एंव छात्राओ के स्वप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण वर्ग के स्वप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन करना।

३ अध्ययन की परिकल्पनाये:

- माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र एंव छात्राओ के स्वप्रत्यय मे सार्थक अन्तर नही है।
- माध्यमिक स्तर के ग्रामीण वर्ग के छात्र–छात्राओं के स्वप्रत्यय में सार्थक अन्तर नही है।

४ सीमांकन:

प्रस्तुत अध्ययन मे केवल बरेली जिले में माध्यमिक विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया।

- प्रस्तुत अध्ययन मे स्वप्राय परीक्षण के लिये 50–50 छात्र एवं छात्राओं को न्यादर्श के रूप मे शामिल किया गया।
- प्रस्तुत अध्ययन मे 25 छात्र एवं 25 छात्राये ग्रामीण एंव शहरी वर्ग से लिये गये है। इस प्रकार कुल संख्या 100 है।

५ प्रतिदर्श एवं न्यायदर्श:

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में शोधकर्ता में उपलब्ध जसंख्या मे से 100 इकाइयों का चयन संभाविता निदेशन के सरित यौदेच्छिम प्रतिदर्शन विधि से किया गया है।

६ साख्यिकीय प्रविधियाँः

प्रस्तुत अध्ययन मे शोधकर्ता ने प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु वर्णनात्मक एवं अनुमात्मक साख्यिकीय प्रविधियां का प्रयोग किया गया है। जो निम्नवत ही मध्यमान, मानक विचलन सह सम्बन्ध।

प्रयुक्त उपकरणः–

Children Self Concept Scale S. P. Ahuwaliya द्वारा निर्मित साख्यिकीय प्रविधि

1. छात्र एवं छात्राओ के स्वप्रत्यय सम्बन्धी
2. प्राप्तांको का मध्यमान, मानक विचलन
3. तथा टी–टेस्ट

लिंग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी०टेस्ट	सचिवकल स्तर
छात्र	50	57.32	6.59		सार्थक नहीं
छात्रायें	50	56.74	5.43	0.64	

छात्र एवं छात्राओ का स्वप्रत्ययः

तलिका का अवलोकन से स्पष्ट है कि टी–टेस्ट का मान 0.64 है जोकि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1. 98 से कम है। अर्थात् मध्यमानो मे सार्थक अन्तर नही है।

अतः शून्य परिकल्पना (01) स्वीकृत अर्थात् छात्र–छात्राओ के स्वप्रत्यय में कोई अन्तर नही है।

ग्रामीण एवं शहरी वर्ग के विद्यार्थियो के स्वप्रत्यय का तुलनात्मक अध्ययन

विषय वर्ग	संख्या	मध्यमान	मनक विचलन	टी–टेस्ट	सार्थकता
शहरी	50	57.42	6.26	0.48	सार्थक नहीं
ग्रामीण	50	56.84	5.78		

ग्रामीण एंव शहरी छात्र छात्राओं का स्वप्रत्ययः

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट है। कि टी–टेस्ट का मान 0.48 है। जो कि सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.98 से कम है। अर्थात् मध्यमानो मे सार्थक अन्तर नही अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत ग्रामीण एवं शहरी वर्ग के विद्यार्थियों के स्वप्रत्यय में कोई अन्तर नही है।

सन्दर्भ सूचीः

१ गुप्ता, एस.पी. (2003) : ''शैक्षिक मापन एवं मूल्यांकन, साहित्य भवन, इलाहाबाद।
२ मंगल, एस.के. (2006) : ''शिक्षा मनोविज्ञान'', प्रिन्ट्स हॉल ऑफ प्राईवेट लिमिटेड, नई दिल्ली।
३ डॉ. अरूण कुमार : शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार
४ कपिल, एच.के. (2001) : ''अनुसंधान विधियॉ, एच.पी. भार्गव बुक हाउस, आगरा।
५ उपाध्याय विवेचना 2004: शारीरिक विकलांगता किशोरों में सृजनात्मकता व आत्मप्रत्य का अध्ययन A